दृष्टि The Vision

Mentorship Program
Nehru Vihar

drishti

Drishti Mentorship Programme (Mains)-2024

Essay

Name of Candidate:	Gaurav Chhimwal	Subject/Code:	DMP(M)- Essay- 3
UPSC Roll No:	8500880	Date:	21 July 2024
Drishti Id:		E-mail Id:	[redacted]
Centre:	Mukharjinagar, Delhi	Medium:	Hindi

Test Code:

Time allowed: Three Hours — *Maximum Marks: 250*

(To be filled by Evaluator only)

Section	(Essay Topic No.)	Marks Obtained
A		
B		
Total		

Overall Feedback

INSTRUCTIONS

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पहले निम्नलिखित निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

- प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबन्ध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएँगे।
- प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिए।
- प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिए।

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

- The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
- Word limit, as specified, should be adhered to.
- Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

For Student Only

Time Taken	Start Time:	End Time:	Student Signature	
Mode of Examination	Online	Offline		

For Office Use Only

Evaluators Code	Evaluator Sign	Evaluation Date	Reviewers Code	Reviewers Sign

Feedback				
Sr. No	मापदण्ड/Parameters	Max. Marks	Section-A (Essay-1)	Section-B (Essay-2)
1.	**परिचय:** विषय की स्पष्टता और सुसंगति। **Introduction:** Clarity of theme and Coherence	10		
2.	**विषय वस्तु:** प्रासंगिकता, विश्लेषण की गहराई और उदाहरणों/साक्ष्यों का उपयोग। **Content:** Relevance, depth of analysis, and use of examples/evidence.	25		
3.	**संरचना और संगठन:** तार्किक प्रवाह, पैराग्राफ संरेखण और विचारों की सुसंगतता। **Structure and Organization:** Logical flow, Paragraph alignment and Coherence of ideas.	20		
4.	**प्रासंगिकता:** विषय से विचलन की अनुपस्थिति, तर्क और पुष्टि/प्रमाणीकरण के बीच संतुलन **Relevance:** Absence of Deviation from Topic, Balance between argument and substantiation.	20		
5.	**भाषा और अभिव्यक्ति:** स्पष्टता, व्याकरण, वाक्यविन्यास, शब्दावली और अभिव्यक्ति **Language and Expression:** Clarity, Grammar, Syntax, Vocabulary and Articulation	20		
6.	**निष्कर्ष:** तर्कों और निष्कर्ष का प्रभावी सारांश। **Conclusion:** Effective summary of arguments and conclusion.	10		
7.	**मौलिकता और रचनात्मकता:** विचार और रचनात्मक अभिव्यक्ति में नवीनता। **Originality and Creativity:** Innovation in thought and creative expression.	20		
	कुल: Total:	125		

*** UPSC Requirement for Essay Paper:**

*Candidates may be required to write essays on multiple topics. They will be expected to keep **closely to the subject** of the essay to **arrange their ideas in orderly fashion** and to **write concisely.** Credit will be given for **effective and exact expression.***

*** निबंध पेपर के लिए यूपीएससी की अपेक्षा:**

*उम्मीदवार को एक विनिर्दिष्ट विषय पर निबंध लिखना होगा। विषयों के विकल्प दिये जायेंगे। उनसे आशा की जाती है कि अपने विचारों को निबंध के **विषय के निकट** रखते हुए **क्रमबद्ध** करें तथा **संक्षेप** में लिखें। **प्रभावशाली एवं सटीक अभिव्यक्तियों** के लिये श्रेय दिया जायेगा।*

Copyright – Drishti The Vision Foundation

निम्न खण्ड A व B प्रत्येक से एक विषय चुनकर दो निबन्ध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000-1200 शब्दों का हो :

Write two essays, choosing one topic from each of the following Sections A and B, in about 1000-1200 words each: (125 × 2 = 250)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

खंड-A/SECTION-A

Topic:

3→ मानवता के बिना विज्ञान, बलिदान के बिना धर्म और सिद्धांत के बिना राजनीति एक वैश्विक समस्या है।

"हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर
बैठ शिला की शीतल छाँह
एक पुरुष भीगे नयनों से
देख रहा था प्रलय प्रवाह"

हिंदी के प्रसिद्ध कवि 'जयशंकर प्रसाद' अपनी रचना 'कामायनी' में एक प्रलय का जिक्र इस रूप में करते हैं, यह प्रलय देव सभ्यता के अत्यधिक भोग, विलास नैतिक पतन, मूल्यों के पतन का परिणाम था। 'मनु' जो इस रचना का नायक है इस प्रलय में बच जाता है और एक पर्वत के ऊँचे शिखर पर बैठकर देव सभ्यता के विध्वंस को अपनी आँखों से देखता है।

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उपरोक्त मिथक कथा का जिक्र हमें विभिन्न धर्मों की पुस्तकों ग्रंथों में भिन्न-भिन्न रूप में मिलता है, ध्यातव्य है कि वर्तमान विश्व भी इसी तरह के एक प्रलय, विध्वंस का साक्षी हो सकता है, क्योंकि जिस प्रकार देव सभ्यता अपने कर्तव्यों से विमुख होकर, भोग, विलास में आनंदित होने लगी थी उसी प्रकार वर्तमान विश्व 'पर' के बजाय 'स्व' पर केंद्रित होते हुए मानवता के बिना विज्ञान, बलिदान के बिना धर्म और सिद्धांत के बिना राजनीति से संचालित हो रहा है।

इस निबंध में हम यही देखने का प्रयास करेंगे कि वर्तमान विश्व किस प्रकार मानवता के बिना विज्ञान, बलिदान के बिना धर्म और सिद्धांतों के बिना राजनीति से संचालित हो रहा है और इसके क्या-क्या विनाशकारी परिणाम सामने आ रहे हैं। आगे हम यह देखने का भी प्रयास करेंगे कि यदि मानवता से युक्त विज्ञान और बलिदान से युक्त

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

धर्म और सिद्धांत से संचालित होने वाली राजनीति अपना ली जाये तो विश्व में क्या सकारात्मक परिवर्तन उपस्थित होंगे।

'मानवता के बिना विज्ञान' पंक्ति का विश्लेषण करें तो मानवता का तात्पर्य है निर्णयन, विमर्श की प्रक्रिया में केवल अपने (स्व) के हितों पर ध्यान न देना अपितु अन्य लोगों, पशु-पक्षी, प्रकृति (पर) को भी अपने दायरे में लाना। मैथिलीशरण गुप्त की इन पंक्तियों के माध्यम से मानवता के मूल्य को समझा जा सकता है-

"यह पशु प्रवृत्ति है, कि आप-आप ही चरे,
मनुष्य वही है जो मनुष्य के लिए मरे।"

वहीं विज्ञान एक दोधारी तलवार है जो एक शक्ति है, वह अपने आप में नैतिक या अनैतिक नहीं है। अपितु, उसका प्रयोग उसके नैतिक या अनैतिक होने का निर्धारण करता है। यदि वह मानवता के मूल्यों से युक्त होगी तो वह नैतिक होगी और जनकल्याण को पुष्ट करेगी किंतु यदि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

वह मानवता के बिना होगी तो वह मानव जाति के साथ-साथ प्रकृति के लिए भी घातक हो सकती है।

वर्तमान विश्व में अनेक ऐसे उदाहरण मिलते हैं जो यह स्पष्ट करते हैं कि विज्ञान, मानवता के मूल्यों में आबद्ध नहीं हो रहा है। चाहे वह द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी द्वारा प्रयोग की जाने वाली रासायनिक गैस का मामला हो या वर्तमान समय में Covid-19 वायरस के उद्भव की गुत्थियाँ, ~~[illegible]~~ यह स्पष्ट करते हैं कि विज्ञान के संदर्भ में मानवता का मूल्य काफी पीछे छूट गया है।

परमाणु हथियारों के संदर्भ में देशों की होड़, अंतरिक्ष के सैन्यीकरण की प्रवृत्तियाँ, युद्ध हथियारों में हो रहे दिनों दिन नवाचार इस तथ्य की ओर इशारा कर रहे हैं कि विज्ञान संबंधी सदुपयोगों में मानवता का मूल्य नहीं रहा, डीप फेक, निजता हनन, गरिमा हनन, आदि से संबंधित मुद्दे भी यही दर्शाते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

'बलिदान के बिना धर्म' उक्ति का विश्लेषण करें तो बलिदान का अर्थ है त्याग की भावना, दूसरों को खुश देखने के लिए स्वयं के हितों को छोड़ने की भावना। कुंवर बेचैन की इन पंक्तियों से त्याग अथवा बलिदान की भावना को समझा जा सकता है -

"तुम्हारे दिल की चुभन भी जरूर कम होगी
किसी के पाँव का काँटा निकालकर तो देखो।।"

अतः स्पष्ट है कि बलिदान का त्याग का तात्पर्य है अपने हितों को संकुचित करते हुए दूसरों के लिए कुछ करने की भावना, अनावश्यक भोग विलास में न पड़ना की बलिदान की भावना का ही द्योतक है।

यह त्याग करने की प्रवृत्ति वर्तमान विश्व के धर्मों में नहीं देखी जा रही है। धार्मिक संकीर्णता, स्वकेंद्रिकता से संचालित होकर विश्व के धर्म, अनेक भौगोलिक क्षेत्रों में संघर्षरत हैं, उदाहरण के लिए चाहे वह तालिबान द्वारा धर्म का दुरुपयोग या ISIS द्वारा दोनों ही प्रवृत्तियों को त्याग करने की भावना या परोपकार की भावना दूर-दूर तक नहीं है।

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

विभिन्न धर्मों में विलासिता, भोग इत्यादि की प्रवृत्तियों में भी उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है इसके कारण चरम व्यक्तिवादिता तथा उपभोग को बढ़ावा मिला है। इससे सामूहिक मूल्यों, सामुदायिक भावना का लोपन हुआ है। इसके अतिरिक्त तमाम धार्मिक नेता स्वयं के स्वार्थ की पूर्ति हेतु, धर्म के दुरूपयोग में लगे हुए हैं उदा० के लिए आसाराम, राम रहीम इत्यादि धार्मिक नेता। इसके कारण समाज में धार्मिक संकीर्णता, सांप्रदायिकता जैसे मूल्यों को बढ़ावा मिला है।

'सिद्धांत के बिना राजनीति' उक्ति का विश्लेषण करें, तो सिद्धांत का तात्पर्य है - नैतिक मूल्य, मानदंड इत्यादि, स्वयं गांधीजी ने भी कहा है कि 'धर्म विहीन राजनीति मृत देह के समान है।' यहां धर्म शब्द नैतिक सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य में ही प्रयुक्त हुआ है। सिद्धांत के बिना राजनीति वर्तमान विश्व की एक प्रमुख समस्या है। विभिन्न देशों के राजनेताओं का

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

नैतिक पतन, अपराध का राजनीतिकरण, धर्म का राजनीति में उपयोग तथा चुनाव में झूठे वादे कर सत्ता कब्जाना इसी प्रवृत्ति को दर्शाते हैं। इसके अतिरिक्त विश्व के विविध देशों में लोकतांत्रिक मूल्यों के बजाय तानाशाही प्रवृत्तियों का उभरना उदा० के लिए ईरान जैसे धर्मतंत्र, तालिबान का अफगानिस्तान पर कब्जा करना, म्यांमार में सैन्य तख्तापलट इत्यादि भी सिद्धांत विहीन राजनीति का चरम निदर्शन है।

इस 'सिद्धांत विहीन राजनीति' का परिणाम यह होता है कि सर्वोदय अंत्योदय जैसे लोकतांत्रिक मूल्यों का लोपन हो जाता है, अल्पसंख्यकों के अधिकारों का उल्लंघन होता है तथा मानवाधिकारों का ह्रास होता है। यह कुरूप राजनीति अंततः संपूर्ण विश्व को एक बड़े युद्ध की तरफ धकेल देती है। उदा० के लिए द्वितीय विश्व युद्ध में हिटलर तथा मुसोलिनी की सिद्धांत विहीन राजनीति ही अशांति का एक प्रमुख कारण थी।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

प्रश्न यह उठता है कि यदि मानवता, विज्ञान के साथ सम्मिलित हो और त्याग, धर्म के साथ तथा सिद्धांत, राजनीति के साथ तो कैसा परिदृश्य उत्पन्न होता है?

यदि मानवता विज्ञान के साथ संलग्न हो जाये तो कोरोना की वैक्सीन जन्म लेती है और गरीब से गरीब देश उस वैक्सीन का फायदा उठाकर रोगों से प्रतिरक्षा उत्पन्न करते हैं। इसी क्रम में eJeoV, उपग्रह व्यवस्था से भी अंततः गरीबी निवारण, समावेशी विकास सुनिश्चित होता है। स्वयं मोदी जी का कहना है कि तकनीक के माध्यम से 'एक क्लिक हजारों-करोड़ों लोगों के जीवन में खुशहाली ला सकता है'। इसके अतिरिक्त जैव प्रौद्योगिकी, नैनो प्रौद्योगिकी, क्वांटम कंप्यूटिंग, AI इत्यादि मानवता से संयुक्त हो तो ये वैश्विक परिदृश्य को बदलने की क्षमता रखते हैं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

यदि बलिदान का मूल्य, धर्म से सुसंगत हो जाये तो दधीचि जैसे उदाहरण जन्म लेते हैं जिन्होंने धर्म की रक्षा, मानवता की रक्षा में अपने शरीर का त्याग कर दिया था। इसी क्रम बुद्ध का आविर्भाव होता है जो संपूर्ण समाज को मानवता, मध्यम मार्ग, आत्मदीपोभव का पाठ सिखाते हैं। यदि त्याग का मूल्य धर्म से मिल जाये तो महावीर का पदार्पण होता है जो समाज को करुणा, अहिंसा जैसे मूल्यों से परिचित करवाते हैं।

इसी तरह धर्म में बलिदान की भावना प्रकृति संरक्षण को भी बढ़ावा देती है उदा० के लिए हिंदू धर्म में नदी, पर्वत इत्यादि की पूजा। इस तरह यह स्पष्ट है कि तमाम धार्मिक उन्मादों, संकीर्णताओं की एक ही दवा है वह यह है कि सभी धर्म त्याग, बलिदान जैसे मूल्यों को आत्मसात कर लें। परिणामतः 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया' का मूल्य स्थापित हो जायेगा।

641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

इसी तरह यदि राजनीति सिद्धांतों से चले तो 'रामराज्य' की अवधारणा जन्म लेती है। उदा० के लिए तुलसी कहते हैं कि यह राम राज्य ऐसा है -

"नहिं दरिद्र कोउ दुःखी न दीना
सब सुंदर सब विरुज शरीरा"
~~अल्पमृत्यु~~ नहिं कवनिउ पीरा
नहीं कोई अबुध न लच्छन हीना।"

इस तरह सिद्धांतों से युक्त राजनीति ग्रामीण विकास, लोकतंत्र को बनाना, मानवाधिकारों का सम्मान, लोकतांत्रिक संस्थाओं का सम्मान, अंत्योदय, सर्वोदय, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व सुनिश्चित करती है। और अंततः संपूर्ण विश्व को 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के लक्ष्य की ओर ले जाती है। जहाँ देशों के मध्य तनाव 'युद्ध घोष' से नहीं अपितु अशोक के 'धम्म घोष' के माध्यम से अर्थात् नैतिक सिद्धांतों से सुलझाये जाते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

इस तरह यह स्पष्ट है कि मानवता सहित विज्ञान, बलिदान युक्त धर्म तथा सिद्धांत युक्त राजनीति ही वर्तमान विश्व को एक खुशहाल भविष्य की तरफ ले जा सकती है। इसके लिए यह आवश्यक है कि सभी देश अपने संकीर्ण हितों को छोड़कर वृहद हितों से चालित हों, सभी धर्मों में धार्मिक सार्वभौमवाद के गुण विकसित हों और सभी राजनेता लोकतांत्रिक मूल्यों से परिचालित हों।

प्रसिद्ध कुमाँऊनी कवि 'गिरदा' की पंक्तियों में कहें तो -

~~चाहे हम लैं भी सकल, चाहे तुम लैं सकल~~

" चाहे हम नी लै सकूँल, चाहे तुम नी लै सकला,
जैता क्वे न क्वे त ल्याली उ दिन य दुनि में
जैता एक दिनों तो आलो उ दिन य दुनि में।"

अर्थात् एक न एक दिन तो इस दुनिया में अवश्य आयेगा जब मानवता से संचालित विज्ञान, त्याग युक्त धर्म और सिद्धांत से संचालित राजनीति से यह विश्व परिचालित होगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Remarks for Essay-1

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिख चाहिये।
(Candidate must no write on this margi

Copyright – Drishti The Vision Foundatio

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Topic:

समाज तब महान बनता है जब समाज के वृद्ध लोगों द्वारा लगाए गए पेड़ों की छाया आने वाली पीढ़ियों को मिले।

किसी भी समाज के महान होने कि कसौटी प्रत्येक विचारक, विद्वान की नजर में अलग-अलग हो सकती है। महात्मा गांधी की मानें तो वे किसी भी समाज की महानता का आंकलन इस बात से करते थे कि उसमें पंक्ति के अंत में खड़े व्यक्ति का कितना महत्व है। तो वहीं भीमराव अंबेडकर जी किसी समाज की महानता का आंकलन इस बात से करते थे कि उस समाज में महिलाओं की स्थिति कैसी है। तो वहीं बुद्ध, महावीर की नजर में किसी समाज की महानता का आशय उसके नैतिक व आध्यात्मिक स्तर से है।

अतः यह स्पष्ट है कि विभिन्न विद्वान महानता की कसौटी को भिन्न भिन्न नजर से देखते हैं, किंतु यदि

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

हम साधारण सी कसौटियों का निर्धारण करें तो हम यह कह सकते हैं कि वह समाज महान है जो नैतिक स्तर पर सहानुभूति, करुणा जैसे मूल्यों से संचालित है; राजनीतिक स्तर पर लोकतांत्रिक मूल्यों से सिंचित है; सामाजिक स्तर पर प्रत्येक प्रकार की वंचना को छोड़ सहयोग पर बल देता है; आर्थिक रूप से संपत्ति का समान रूप से बंटवारा, वितरणात्मक न्याय जैसे मूल्यों को स्वीकारता हो।

साथ ही महानता की एक कसौटी यह भी है कि कि वही समाज महान है जिसके वृद्ध लोगों द्वारा लगाए गए पेड़ों की छाया आगे आने वाली पीढ़ियों को भी मिले। अर्थात वह समाज सतत विकास के मूल्यों को धारण करता हो और संसाधनों को उपहार की नजर से नहीं अपितु ट्रस्टी की नजर से देखता हो।

drishti
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

इस निबंध में हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि वृद्ध लोगों द्वारा लगाये गये पेड़ों जैसी संरचनाओं का क्या तात्पर्य है जिसका लाभ आगे आने वाली पीढ़ियों को मिलता है। क्या महानता की कसौटि में उन पेड़ नामक संरचना से सिर्फ लाभ लेना शामिल है या उसमें संशोधन करना भी।

समाज के वृद्ध लोगों द्वारा लगाये गये पेड़ का एक अर्थ तो हम शाब्दिक रूप में पेड़ के रूप में ही स्वीकार कर सकते हैं किंतु दूसरे अर्थ में इस पेड़ का तात्पर्य यह भी हो सकता है कि वे सामाजिक, राजनीतिक धार्मिक, आर्थिक तथा नैतिक संरचनाएं जो हमें अपने पूर्वजों से विरासत में मिले हैं।

यदि वृद्धों द्वारा लगाये गये पेड़ों के शाब्दिक अर्थ को स्वीकारें तो निश्चित रूप से यह संकल्पनात्मक रूप से सतत विकास की बात करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

सतत विकास का तात्पर्य ऐसे विकास से है जिसमें विकास की प्रक्रिया में अंतर्पीढ़ी समता बरती जाती है। संसाधनों के इस्तेमाल अर्थात संसाधनों का इस्तेमाल आने वाली पीढ़ियों के विकल्प को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। यदि पुरानी पीढ़ी इतनी संवेदनशील है कि वह विकल्प की आवश्यकताओं को भी ध्यान में रख रही है तो निश्चित रूप से वह समाज एक महान समाज है।

यदि इस संदर्भ में भारतीय समाज की वर्तमान स्थिति पर नजर डालें तो प्रसिद्ध कवि गिरीश तिवारी की कुछ पंक्तियां दिमाग में कौंधती हैं-

"सारा पानी चूस रहे हो
नदी समंदर लूट रहे हो
गंगा यमुना की छाती पर
कंकड़ पत्थर कूट रहे हो
जिस दिन डोलेगी ये धरती
बोल व्यापारी तब क्या होगा?"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस व्यापारी मानसिकता से वर्तमान भारतीय समाज संचालित हो रहा है। औद्योगिकता शहरीकरण की प्रक्रिया में भारतीय मानुष का पेट इतना बड़ा हो गया है कि वह पेड़ तो छोड़िए बड़े-बड़े पर्वतों को, नदियों को निगलने को तैयार है। हाल ही में उत्तराखंड में जोशीमठ का दरकना, फिर वनाग्नियों का प्रचंड रूप धारण कर लेना भारतीय मानुष की व्यापारी मानसिकता तथा पेट की अनियंत्रित भूख का परिणाम है।

इस परिदृश्य में हम महानता के उस स्तर को नहीं छ पायेंगे जो हमारे पूर्वजों ने छुयी थी। हिमालय है हमारे पूर्वजों ने हमें हरे-भरे पेड़, स्वच्छ नदियां, बड़े-बड़े पहाड़ विरासत में दिये लेकिन हमने भविष्य की पीढ़ियों का लिहाज न करते हुए इस विरासत का अपमान किया। आज परिणाम यह है कि प्रतिदिन नई-नई आपदा, संसाधनों से रहित क्षेत्रों से युक्त भूभागों को हम अगली पीढ़ियों को सौंप रहे हैं।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

वृद्धों द्वारा लगाये गये 'पेड़
चायक संरचना' का यदि हम अर्थ विस्तार
करें तो राजनीतिक विरासत के रूप में
हमारे पूर्वजों ने हमें एक समृद्ध लोकतंत्र,
पंचायती राज, समावेशी संविधान इत्यादि
से विभूषित किया है। इस संदर्भ में
यह स्पष्ट है कि हमारे वृद्धों ने एक
महान समाज होने को पुष्ट किया है।
अब वर्तमान पीढ़ी की भी यह
जिम्मेदारी है कि वह इन मूल्यों
से सुसज्जित राजनीतिक व्यवस्था को
अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करे।

हालांकि इस संदर्भ में
समस्या वर्तमान में यह है कि
आये दिन संवैधानिक मूल्यों का तिरस्कार,
संसद की घटती उत्पादकता, राजनीति का
का अपराधीकरण तथा अपराध का
राजनीतिकरण जैसी प्रवृत्तियों ने
हमारी राजनीतिक व्यवस्था को
विद्रूप कर दिया है, इस राजनीतिक

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

विद्रूपता को अदम गोंडवी निम्न रूप से दर्शाते हैं —

"एक जनसेवक को दुनिया में अदम क्या चाहिए
हाथ में माईक रहे, चार-छ चमचे रहें, माला रहे।"

वृद्धों द्वारा विरासत में मिले पेड़ का अर्थ हम आर्थिक संरचना के रूप में भी ले सकते हैं। वर्तमान समय में भारत विश्व की पाँचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित है। इसे यहाँ तक पहुँचाने में हमारे वृद्धों ने अधिकाधिक पसीना बहाया है। इसमें प्रत्येक मजदूर, श्रमिक तथा पूँजीपति का योग रहा है।

यद्यपि आर्थिक संरचना के स्तर पर बढ़ती क्षेत्रीय असमानता, अपवर्जी विकास, अर्थव्यवस्था का अनौपचारिकीकरण जैसी प्रवृत्तियाँ दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। आय की असमानता पर गौर करें तो क्रेडिट स्विस के अनुसार भारत के टॉप 1% जनसंख्या के पास 51% संपत्ति का हिस्सा है और भारत के बॉटम 60% जनसंख्या का राष्ट्रीय संपत्ति में

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)
641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

मात्र 4.5% हिस्सा है। इस तरह स्पष्ट है कि आर्थिक संरचना के स्तर पर हम अनेक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, अतः हम महान समाज के स्तर पर तभी प्रतिष्ठित हो पायेंगे जब इन चुनौतियों से निपटते हुए एक समावेशी और क्षेत्रीय रूप से संतुलित अर्थव्यवस्था हम अगली पीढ़ी को सौंपें,

वृद्धों द्वारा लगायी गयी पेड़ नामक संरचना का अर्थ विस्तार हम सामाजिक सांस्कृतिक संरचना के रूप में भी ले सकते हैं, धपातव्य है कि हमें हमारे पूर्वजों से विविधता में एकता, धार्मिक समन्वय, समता जैसे मूल्यों से सुसज्जित एक समाज प्राप्त हुआ हालांकि इसमें कुछ नकारात्मक प्रवृतियां जैसे की लैंगिक असमानता व भेदभाव, जातिगत भेदभाव, छुआछूत जैसी प्रवृतियां भी हमें विरासत में प्राप्त हुई। अतः एक

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh

Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

महान समाज का स्तर हम तभी प्राप्त कर पायेंगे जब इन जड़ हो चुकी नकारात्मक रूढ़ियों को उखाड़ फेंकेंगे। इस तरह एक सकारात्मक, सहयोग, का समन्वय, लैंगिक समन्वय जैसे मूल्यों से युक्त समाज को निर्मित कर इसे भावी पीढ़ियों को सौंपना चाहिए।

वृद्धों द्वारा मिली पेड़ जैसी संरचना को हम तकनीकी विरासत के रूप में भी देख सकते हैं, ध्यातव्य है कि 1969 में ISRO की स्थापना तथा DRDO जैसी संस्थाएं, IIT का एक सुविकसित नेटवर्क, अंतरिक्ष क्षेत्र, जैव प्रौद्यो० के क्षेत्र में नवीन उपलब्धियां हमें विरासत में प्राप्त हुई हैं। अतः अब एक महान समाज के रूप में हम तभी स्थापित हो पायेंगे जब इस तकनीकी प्रगति में अपना योग देकर इसे आगे की पीढ़ियों को हस्तांतरित करें।

ध्यातव्य है कि वही समाज महान होता है जो अपने पूर्वजों से प्राप्त राजनीतिक, भौगोलिक, पर्यावरणीय,

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

आर्थिक, नैतिक संरचनाओं को ज्यों का त्यों नहीं स्वीकारता है अपितु उनमें योग, नवाचार, सकारात्मक परिवर्तन कर आगे की पीढ़ियों को सौंपता है। इसी बिंदु पर जयशंकर प्रसाद जी की यह पंक्ति याद आती है-

"औरों को हसते देखो मनु हँसो और सुख पाओ
अपने सुख को विस्तृत करलो सबको सुखी बनाओ"

अतः वही समाज महान है जो केवल स्वयं के सुखों पर केंद्रित नहीं रहता है अपितु राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा नैतिक संरचनाओं में इस प्रकार सकारात्मक रूपांतरण करता है कि वह आगे आने वाली पीढ़ियों के विकास में सहायक हो सके।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लि
चाहिये।
(Candidate must
write on this marg

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Remarks for Essay-2

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लि[खना] चाहिये।

(Candidate must [not] write on this mar[gin])

Copyright – Drishti The Vision Foundation

P E S T A L H I D E → Env

लोकतंत्र
संविधान
धर्म - प्रांत
आदर्श

पेड़ → मूल्य
लोकतांत्रिक स्तर
सामाजिक स्तर की संरचना

SPACE FOR ROUGH WORK

महान? → मूल्य, तकनीक, अर्थ, राजा

Intro

महानता? → अंबेडकर, गांधी, रामानुज, प्राण तौर पर

भला भला

दैहिक दैविक भौतिक तापा

+ve →

-ve → सा॰ जाति, धर्म संकीर्णता, IR - सीमा विवाद, सुरक्षात्मक चुनौतियां

Intro महानता? [मना न स्तर

महानता → कारक → मां, आदि - शक्ति, मूल्य अधमलोल, पारस्परिक सहयोग, प्रत्येक व्यक्ति का महत्व, पेड़ों की छाया आने वाली पीढ़ियां]

सतत विकास
पेड़ काल्पनिक ← विरासत →

राज - लोकतंत्र, संविधान, PRI, न्यायपालिका

विरासत - अर्थ - श्रम, पूंजी, मजदूर

सा॰ → विविधता में एकता, सहयोग

नैतिक ...

तकनीकी - विरासत → गगनयान, इसरो DRDO, IIT

Env

-ve
संरचना
सुधार
जाति
संकीर्णता
नैतिक विकलता

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

SPACE FOR ROUGH WORK

Intro → देव सभ्यता का दमन →
↳ वर्तमान विश्व की 3.4 घटना

Intro2 → दैहिक सम्पदा
↳ मान (शिष्टि) --
↳ सम्पन्नि स्वजादाल

हिन्सीटी के अनुग

Body → ① <
② <
③ < PESTEL HIDE
④ < 'यद्यपुरु-'
'औरों को हँसते'
⑤ < 'तुम्हारे दिल -'
⑥ < 'जब तक मनुज --'
'दधीचि, शिबि'

क्या होना चाहिए।

'धर्म - धृति
↳ परहित

निष्कर्ष औरों को

'लौटे हैं दिल्ली --'
'बापू --'
'दैहिक दैविक -'
'रखैती न'
'एक जनलेबक में चार छ: नईके'

सिद्धांत के बिना राजनीति

बिना
① तिदिरशासन-
② चर्च का शासन
↳ धरती गोल
↳ सूर्य की परिक्रमा
③ ↳ अंधकार का युग
④ उत्तर कोरिया
↳ सोने वाले को गोली
⑤ तालिबान
↳ महिला मतदसमान

साथ
① रामराज्य
② लोकतंत्र
③ तितिक्षा का ...
④ राजनीति ...

① समता ? → स्वरूप
↳ मानव + पशु + पक्षी
आधुनिक विचार
विज्ञान - सिद्धांत - मानव जीवन

बिना ? →
• उ. कोरिया → नीति
- परमाणु हथियार
बर्म, जापान, हिरोशिमा
↳ लादेन,
↳ ग्रह, अंतरिक्ष का सैन्यीकरण
↳ वायरस (जैव हथियार)
↳ IIWW - रासायन हथियार

साथ में
↳ कोविड वैक्सीन
↳ उपग्रह व्यवस्था
↳ पूर्वानुमान आपदा
↳ जैव, नैनो, रोबोट
↳ नाभिकीय - स्वच्छ ऊर्जा

② बलिदान (त्याग) के बिना धर्म
↳ मुंड नड़ाये
↳ आडंबर पाखंड

बिना
① विलासिता → कुरीतियां
↓
देव सभ्यता
② संघर्ष → सांप्रदायिकता
ISIS,
③ समाज - उपभोक्तावाद, व्यक्तिवादिता
↓
सामूहिक × मूल्य
↳ संघर्ष, ध्रुवीकरण
④ महायान ① → भोग ①
↳ पंचमकार
↳ तंत्र
) समाज को भोग विलासिता

साथ ① दधीचि, शिबि
हड्डियां ↳
② धम्म - अशोक
③ बुद्ध → मध्यम मार्ग
↳ चींटा (वासनाओं)
④ जैन धर्म - अहिंसा, करुणा
⑤ सनातन धर्म - प्रकृति पूजा
↳ प्रकृति केन्द्रित
↳ 'सूर्य, नदी, पेड़'
मां - धरती

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिए।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | 641, 1st Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi | 21, Pusa Road, Karol Bagh, New Delhi | 13/15 Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj | 47/CC, Burlington Arcade Mall, Vidhan Sabha Marg, Lucknow | Plot No. 45& 45A, Harsh Tower-2, Main Tonk Road, Vasundhara Colony, Jaipur | 12, Main AB Road, Bhawar Kuan, Indore, Madhya Pradesh
Phone: 8750187501 :: e-mail: care@groupdrishti.in :: Website: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation